तात्पर्य

श्रीभगवान् को कुंठित जड़ इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता। यह सिद्धान्त है कि भगवान् श्रीकृष्ण के नाम, यश, लीला-विलास आदि को जड़ इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता। जो प्रामाणिक आचार्य के आश्रय में शुद्ध भक्तियोग के परायण है, उस भक्त के हृदय में ही वे प्रकट होते हैं। 'ब्रह्मसंहिता' में उल्लेख है, **प्रेमाञ्जनच्छुरित**—भगवान् गोविन्द के प्रति अनुरागमय प्रेमभाव का सेवन करने से अन्तर में और बाहर भी उनका दर्शन नित्य प्राप्त रहता है। अतः जनसाधारण के लिए वे अगोचर हैं। यहाँ उल्लेख है कि यद्यपि वे सर्वव्यापक हैं और सर्वत्र विद्यमान हैं, पर जड़ इन्द्रियों से उनकी अनुभूति नहीं होती। परन्तु चाहे हम उन्हें देख नहीं सकते, फिर भी सब कुछ वस्तुतः उन्हीं के आश्रय में स्थित है। सातवें अध्याय के अनुसार, सम्पूर्ण विश्वीय सृष्टि उनकी परा-अपरा नामक शक्तियों का समुच्चयमात्र है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सूर्यकिरणराशि के विस्तार के समान भगवत्-शक्ति सम्पूर्ण सृष्टि में विस्तीर्ण हो रही है; सब कुछ उसी के आश्रय में है।

इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि श्रीभगवान् सर्वव्याप्त हैं, इसलिए उनका अपना निजी स्वरूप समाप्त हो गया है। इस कुतर्क का निराकरण करने के लिए श्रीभगवान् कहते हैं, 'मैं सर्वव्यापक हूँ और सब कुछ मेरे आश्रित है, फिर भी इस सम्पूर्ण सृष्टि से मैं असंग हूँ।' उदाहरणस्वरूप, राजा अपने प्रशासन का अधीश्वर होता है; प्रशासन उसकी शक्तियों का एक प्रकाशमात्र है। विविध प्रशासकीय विभाग राजा की विभिन्न शक्तियाँ हैं तथा प्रत्येक विभाग राजा की सामर्थ्य पर आश्रित है। परन्तु राजा से यह आशा नहीं की जाती कि वह प्रत्येक विभाग में स्वयं उपस्थित रहेगा। यह एक स्थूल उदाहरण है। इसी प्रकार हम जो कुछ भी देखते हैं, प्राकृत-अप्राकृत जितनी सृष्टि है, वह सब श्रीभगवान् की शक्ति पर आश्रित है। उनकी विभिन्न शक्तियों के प्रसारण से सृष्टि होती है और जैसा भगवद्गीता में कहा है, अपनी शक्तियों के प्रसारण और स्वांश-प्रकाश के रूप में वे सर्वत्र विद्यमान हैं।

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।।५।।

न=नहीं (है); **च**=तथा; **मत्स्थानि**=मुझ में स्थित है; **भूतानि**=सम्पूर्ण सृष्टि; **पश्य**=देख; **मे**=मेरी; **योगम् ऐश्वरम्**=अचिन्त्य योगशक्ति को; **भूतभृत्**=सम्पूर्ण जीवों का भर्ता; **न**=नहीं; **च**=तथा; **भूतस्थः**=प्राकृत सृष्टि में स्थित; **मम**=मेरा; **आत्मा**=स्वरूप; **भूतभावनः**=सम्पूर्ण सृष्टि का कारण।

अनुवाद

और यह सृष्टि भी मुझमें स्थित नहीं है। मेरे इस योगैश्वर्य को देख! सम्पूर्ण जीवों को धारण-पोषण और उत्पन्न करने वाला होने पर भी मेरा आत्मा उनमें स्थित नहीं है।।५।।